सांस्कृतिक तकनीक सामाजिक

सांतसा

मासिक मुखपत्र

ज्येष्ठ २०६६ वि.सं., मई–जून २००९ ई.स., वर्ष – १२ अंक – ३

प्रकाशक
सांतसा न्यास
प्रसांत भवन, बी ५१२, सड़क ४,
स्मृतिनगर, भिलाईनगर, जि.दुर्ग, छत्तीसगढ़
✆ ०७८८–२३९२८८४, ९९८१९२३२३०
E-mail : triloki_nathkshatriya@yahoo.com

सम्पादक : ब्र.अरुणकुमार "आर्यवीर"
पुनीत प्लाझा, फ्लैट १, प्लॉट १५,
सेक्टर ३०, सानपाडा, नवी मुम्बई
✆ ९२२०५६९५९१, ९८९२९८९७२३
E-mail : aryaveer@santasa.org,
aryaveer@rediffmail.com

<www.santasa.org>, <www.hellwithdemocracy.org>

नौटंकिया साधू महाराज

प्रजातन्त्र के सारे साधू महाराज महा-नौटंकीबाज, हिरण्य-आंख (आंख में सोना भर लिया है जिनने), धर्म के धंधेबाज, धन के गुलाम, सुविधाबाज, भाषणबाज, चेला-राज और समाज कोढ़ खाज हैं। ये इम्पोर्टेड कारों में घूमते, ए.सी. कक्षों में रहते, फोम गद्दों पर सोते, नायलॉनी टेरीकॉटी कपड़े पहनते, क्रीमों चुपड़े सजे-संवरे चेहरे, कृत्रिम सेंटों महकते, राजसी ठाठ वाले, काले धन वालों के जर गुलाम होते हैं। इनमें कहीं भी वानप्रस्थ और संन्यास का एक भी गुण नहीं है। इन सबमें एक बात समान है कि इन सब ने धर्म को प्रजा के स्तर तक सस्ता और चालू कर दिया है। ये राजनेताओं के समान चिकनी-चुपड़ी बाते करते हैं। अन्धे चेलों की जमात घिरे तथाकथित धर्म-भाव जीते भगवान को घटिया करते छुट्टे सांड की तरह घूम रहे हैं। ये सब भी वर्तमान प्रजातन्त्र का ही उपयोग और उपभोग कर रहे हैं। प्रजातन्त्र की उपज हैं ये। राजनैतिक पार्टीबाज भी हैं। सारे के सारे थोथा चना बाजे घना हैं।

(साभार प्रजातन्त्र हत्या क्रान्ति)

इस अंक में...

वैदिक प्रबन्धन विधाएं......... ०२
भा–रत प्रबन्धन................ ०२
सिद्धिदा प्रबन्धन.............. ०३
सुख नगरी के नागरिक...... ०६
प्रजातन्त्र हत्या क्रान्ति....... १०
भिखारी नहीं स्वामी बनो.... १२
अधुनातन है संस्कृति पुरातन..... १३
कहानी.......................... १४

नक्षत्र, भाग्य, वास्तु, प्रजातन्त्र और स्वयं से घटिया की पूजा सबसे बड़े दुर्भाग्य हैं।

एकी प्रबन्धन प्रारूप

वैदिक प्रबन्धन विधाएं

(ऋग्वेद १०/६३/५)

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम्।

ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये।।

१. सुवृधा = महत वृद्धि वाले।
२. सम्राजः = चक्रवर्ती राजा।
३. यज्ञम् = त्यागन, अर्चन-पूजन, संगतिकरण।
४. आ ययुः = प्राप्ति से भी प्राप्ति।
५. अपरिह्वृता = चुनौतियां विजेता।
६. दिवि क्षयम् = कल्याणमयी गृहव्यवस्था।
७. महः = प्रतापी।
८. आदित्यान् = सर्वदिश प्रभावी।
९. नमसा = नम्रता के साथ।
१०. सुवृक्तिभिः = सटीक त्यागन ग्रहण। शरीर में मम-नमम वत
११. स्वस्तये = कल्याण हेतु।

1. Great enlarger.
2. Great king.
3. Leaving, Worship workship, Organisation.
4. Gain from gain too.
5. Winner of challanges.
6. Welfare house keeping.
7. Graceful.
8. Effective all directional.
9. With politeness.
10. Proper take and give like me and not me system in body.
11. For welfare.

(७) भा–रत प्रबन्धन

(श्रीमद्भगवद्गीता २/१७)

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्।
विनाश्यमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति।।

(१) प्रकाश ज्योति-रत = भा-रत।
(२) संघर्ष कर।
(३) शरीरी बन।
(४) नित्य जो।
(५) अमाप जो।
(६) अन्तवत है शरीर।

अन्तवत है हर कार्य। कार्यकर्ता जो ज्योतिरत करता कार्यारोहण अमापता नित्यता से। *क्रमशः.....*

(साभार गीता प्रबंधन)

"नूर"

प्रथम ब्रह्म का फैला नूर,
अति पास है और अति दूर।
मानव इससे हो भरपूर,
जग नूर का तू बन नूर।
श्रम से ताप हो चकनाचूर,
बरसे तुझ पर ज्ञान का नूर।
हिम्मत साध तू वीर व शूर,
सहज वरेगा धन-यश की हूर।

इक्कीसवी सदी की वैदिक प्रबन्धन विधाएं....

"सिद्धिदा प्रबन्धन"

आठ चक्र नौ द्वार का हठ दुर्ग है अयोध्या अजेय। इस दुर्ग की अधिपत्या है दुर्गा। इस दुर्गा का नाम है आत्मा। इस पुरी में दो गुप्त द्वार भी हैं। यह पुरी अजेय है, क्योंकि यह दुर्ग दुर्गा–आत्मा रक्षित है। हर आत्मा इस दुर्ग की रक्षा नहीं कर पाती है, क्योंकि वह दुर्गा नहीं होती है। इस दुर्ग के रक्षण के गुण जग में जीवन प्रबन्धन या कार्य प्रबन्धन के भी हैं। शरीर के भीतर ये अष्ट चक्र नव द्वार स्वस्थन करते हैं। शरीर के बाहर ये कार्य सिद्धि करते हैं। इन गुणों के अनुपात में मानव अपने जीवन में सफल होते हैं। इन अठारह सिद्धि–दा गुणों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

(१) अणिमा :– अणोर अणीयान स्तर पर चिन्तन क्षमता का नाम है अणिमा। संसार का सूक्ष्म से सूक्ष्म औजार –'धी' है जो आत्मा का साधन है। अणिमा सम्पन्न आत्मा १) पदार्थ के संघीभूत ऊर्जा रूप। २) पदार्थ के स्फुरण (क्वांटम) ऊर्जा प्रारूप तथा ३) पदार्थ के वर्च या कल्पनातीत (वर्चुअल) ऊर्जा स्वरूप तथा इन के रहस्यों को तथा उपयोगों को जानता है। वहां ४) ऊर्जा इससे भी सूक्ष्म पदार्थ–अपदार्थ, नपदार्थ, सपदार्थ रहस्यों तथा उपयोगों और ५) ऊर्जा के चैतन्य स्फुरणों, जो सर्वाधिक सूक्ष्म है को भी पहचानता है तथा उनका उपयोग करता है। अणिमा सिद्ध परम ज्ञानी होने के कारण हर बात भाव, अर्थ, शब्द, रूप में सटीक तत्काल पहचान लेता है।

(२) लघिमा :– गुरुत्व का रहस्य पहचान लेना लघिमा है। गुरुत्वाकर्षण ऊर्जा का सर्वाधिक कम भार या लघु तरंग ऊर्जा रूप है। इस तरंग कणिका का माप विज्ञान को अभी मालूम नहीं है। दुर्गा–आत्मा इस रहस्य को तथा ऊर्जा के वितान स्वरूप को पहचानता है। इस कणिका का नाम गुरुत्वान है। यह कणिका फोटान से सूक्ष्म है। तभी तो यह फोटान गति को परिवर्तित कर देती है। फोटान गुरुत्वान कणिकाओं निर्मित है। दुर्गा प्रबन्धक इस सिद्धि का प्रयोग भौतिकशक्ति उपयोग के क्षेत्रों में करता हुआ, इसमें भी सूक्ष्म चैतन्य शक्ति का लघिमा ज्ञान के कारण सदुपयोग करता है।

(३) प्राप्ति :– प्राप्ति हमेशा इष्ट लक्ष्य की होती है। लक्ष्य के स्वरूप को अच्छे से पहचानते हुए उसके लिए दशरूपकम् आयोजन के द्वारा –'प्राप्ति' सिद्ध–सिद्धिदा प्रबन्धक होता है।

(४) प्राकाम्य :– इच्छित की प्राप्ति प्राकम्य है। जो प्रबन्धक अपनी समताओं तथा योग्यताओं का अपेक्षाओं से सटीक सामंजस्य जानता है वह प्राकम्य है। प्राकम्य असिद्धि आज देश बर्बाद कर कर रही है। देश के सर्वोच्च तकनीकी संस्थानों में एक पद पर चयन पांच सौ अप्रकाम्यों

में से एक का होता है। मोटी भाषा में चार सौ निन्यानबे परीक्षक अपने प्राकाम्य आकलन गलत लगाते हैं। अर्थात् उनमें अपनी योग्यता तथा क्षमता एवं पद का साम्य ज्ञात नहीं है। वे अपना श्रम मेहनत बर्बाद करते है। प्राकाम्य समझ न होने के कारण देश के करोड़ो युवकों के करोड़ों श्रमवर्ष तथा परिवहन संसाधन (यात्रा व्यय) एवं अर्थ संसाधन (फीस आदि) एवं सहकारी व्यवस्था बर्बाद हो रहे हैं, जिनका सरंक्षण आवश्यक है।

(५) **इशित्व** :– व्यवस्था पर सहजता पूर्वक अप्रयास पूर्ण अधिपत्य ईशित्व है। पलक झपकने के समान सहज प्रयास द्वारा व्यवस्था का संचालनादि ईशित्व है।

(६) **वशिता** :– पंच इन्द्रिय युक्त चल संसाधनों, पंच तत्व निर्मित भौतिक संसाधनों का त्रि-सप्त निर्मित त्रि-पंच नियन्त्रित स्वयं के अस्तित्व पर अधिकार रख इनका लक्ष्य प्राप्ति सदुपयोग वशित्व दुर्गापन है।

(७) **कामवासयितृत्व** :– कामनाओं से पार संकल्पनाओं की आपूर्ति करने को कामवासयितृत्व कहा जाता है। संकल्प पूर्ति के लिये मानव को तीव्र गति संचरित होकर गति प्रबन्धन करना पड़ता है। सकंल्प का सीधा सम्बन्ध गति से है। ब्रह्म संकल्प सिद्धि के क्षेत्र में मानव संकल्प शरीर के माध्यम से अव्याहत गति से ब्रह्म गुण आह्लाद भोगता है।

(८) **महिमा** :– महत्व का विस्तार करना महिमा है। महिमा सिद्धि का अर्थ है व्यवस्था के हर कर्मचारी में कार्य की महत्ता या गुरुता तथा अपने कन्धों की भार वहन क्षमता का ठीक-ठीक ही ज्ञान हो जाना।

(९) **सर्वज्ञत्व** :– अपने अधिकार क्षेत्र के हर संसाधन, हर क्षेत्र, हर कर्मचारी, हर त्रुटि, हर सटीकता, हर कार्य, हर अर्हता, हर नियम, हर नियमोल्लंघन, हर दण्ड विधान, हर इनाम विधान को जानना और कार्य सिद्धि के क्षेत्र में उसका उपयोग करना सर्वज्ञत्व-दुर्गा पन या आत्मापन है।

(१०) **दूरश्रवण** :– अतीत की आवाज तथा भविष्य की पदचाप अतिमद्धिम होती है। अतीत की त्रुटियों की, अतीत के उन्नति के कारणों की आवाज समय-समय पर सुनकर उससे सावधान होकर भविष्य की पग-ध्वनि को समझते जो व्यवहार आज जीता है वह दूर श्रवण दक्ष है। यह दूरश्रवण सिद्धि या दुर्गापन है।

(११) **परकाय प्रवेशन** :– हर व्यक्ति की काया की एक आधार भावलय होती है। एक स्तर होता है। दुसरे व्यक्ति उसे उस भावलय से तथा स्तर से कम या अधिक आंक उससे व्यवहार रखते हैं। परकाय प्रवेशन में सिद्ध व्यक्ति उसे ठीक-ठीक भावलय तथा स्तर में पहचान कर अ) उसकी मदद करता है, ब) उसे कार्य देता है, स) उससे व्यवहार करता है यह परकाय प्रवेशन है।

(१२) वाक् सिद्धि :– परा, पश्यन्ति, मध्यमा, वैखरी एक ही अर्थ की सम भाषा में अभिव्यक्ति वाक् सिद्धि है। वाक् सिद्ध व्यक्ति असत्य भाषण कर ही नहीं सकता है। वह जितना भी जानता है निश्चयात्मक जानता है तथा उतना ही कहता है जितना निश्चयात्मक जानता है।

(१३) कल्पवृक्षत्व :– कल्पवृक्षत्व का अर्थ है अन्त्य सन्तुष्टि। एक पूर्ण सन्तुष्ट व्यक्ति के लिये कल्पवृक्ष बेकार है। कल्पवृक्ष सिद्धि-दा प्रबन्धन का वह तत्व है, जो कर्मचारियों को तुष्टि कारक है। तुष्टि करण का अर्थ है कि बिना मांगे ही सब कुछ मिल जाने की स्थिति। कई परिवारों में बच्चे जो संयमित होते हैं माता-पिता से काल्पवृक्षत्व पाते हैं।

(१४) सृष्टि :– इष्ट को साकार रूप में साक्षात् उतारकर यथार्थ कर लेना सृष्टि है। यथावत बिना त्रुटि के हर बार वही की वही पूर्ण रचना करना सृष्टि है। इसकी आधार शर्त यह है कि हर कुछ निर्माणक त्रुटि रहित ही रहना। आजकल सृष्टि तत्व पाने के लिए निश्चित समय में पूरी मशीनरी को बदल देने की परिपाटी भी कई उद्योग संस्थानों में लागू है।

(१५) संहारकण समर्थ :– एक सीमा के बाहर त्रुटि पूर्ण हो जाने पर व्यवस्था सम्पूर्ण संहारणीय होती है। इसका सम्पूर्ण नवीनीकरण आवश्यक होता है। यह सामर्थ्य भी दुर्गा प्रबन्धक के पास होना चाहिए।

(१६) अमरत्व :– भू, आकाश, मशीनों के मूल पदार्थ आदि अमरत्व तत्वों की समझ अमरत्व प्रबन्धन का कार्य है। मनुष्य के लिए शत तथा शताधिक वर्ष स्वस्थ तथा अदीन हो जीना अमरत्व है।

(१७) सर्वन्यायकत्व :– पूर्ण कार्यव्यवस्था में विभिन्न तरीकों से सर्वव्यापक होना तथा हर नियम उल्लंघन का सटीक दण्ड तथा नियम पालन का यथोचित मूल्य देना सर्वन्यायकत्व है।

(१८) भावना :– भावना का दो अर्थों में प्रयोग होता है। दुसरे के शब्दों हावभावों से अभिव्यक्त अर्थ को ठीक समझना, सबके प्रति अपने मधुमय व्यवहार में कही कोई भी त्रुटि न होने देना।

इन अठारह तत्वों से युक्त प्रबन्धक ही सिद्धि-दा प्रबन्धक है। इन अठारह तत्वों की प्राप्ति का पथ है तितिक्षा। अभौतिकीय इन्द्रियों, प्राण, वाक्, मन, बुद्धि, धी, चित्त तथा अंह के सम्पूर्ण संयमन, स्थैर्य सन्तुलन तथा विक्षेप रहितता पर तितिक्षा सिद्धि मानी जाती है।

डॉ.त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय
पी.एच.डी. (वेद), एम.ए. (आठ विषय), सत्यार्थ शास्त्री,
बी.ई., एल.एल.बी., डी.एच.बी., पी.जी.डी.एच.ई., एम.आय.ई. (१०७५२)
बी.५१२/४/स्मृतिनगर, भिलाईनगर, जि.दुर्ग, (छ.ग.) ४९००२० दूर. ०७८८–२३९२८८४
E-mail : triloki_nathkshatriya@yahoo.com

"जियो तो ऐसे जियो"–सुख नगरी के नागरिक

–भापा वचन

(१) परमात्मा कायनाथ और मानवता नियमों का रचयिता तथा पालनकर्ता होने से बेफिक्र है। जीवात्मा भी कायनाथ और मानवता नियमों के पालन से बेफिक्र हो सकता है इसके अतिरिक्त बेफिक्र हो जाने का और कोई रास्ता नहीं है। बेफिक्र होने के अन्य सारे रास्ते फिक्र साथ लेकर चलते हैं।

(२) परमात्मा फिकर नहीं करता है। वह शत-प्रतिशत बेफिक्र है। परमात्मा जीवात्मा की अपनी फिकर से कभी गंदा नहीं हो सकता है। यह मत सोचो कि वह हमारी फिकर लेगा। अपनी फिकर खुद करो।

(३) हर आदमी अपनी बोयी, अपनी खाद-पानी दी हुई, अपनी निंदाई की हुई, अपनी कीट बचाई फसल काटता है। बबूल की फसल बोने वाले लकड़ी या दातौन बेचेंगे, गरीब बनेंगे। काजू-बादाम की फसल बोनेवाले ठंडी छांह तो पाएंगे ही, बड़े व्यापार करेंगे, धनी बनेंगे। अपनी कमाई के हकदार तुम बनो।

(४) परमात्मा की आज्ञा है कि कर्म करते जीयो। सबसे कम जीनेवाली टिड्डी भी कर्म करते जीती है तो आकाश की हवा पाती है। अगर वह कर्म न करे तो मिट्टी दबे ही मर जाए। परमात्मा सबका कर्म देखता है तब कर्मानुसार ही फल देता है।

(५) महाजन बनना चाहते हो तो महाजनों के रास्ते पर चलो। अपनी पीठ दुहरी मत करो। जी हुजूरी का नाम चमचागिरी है। चमचागिरी भिखारी होने का रास्ता है। सीधी रीढ़ व्यक्ति परमात्मा की पहली पसन्द है। परमात्मा की सारी साधनाएं सीधी रीढ़ स्थिति की जाती हैं। सीधी सधी रीढ़ साधक ही ब्रह्म कृपा के हकदार हैं।

(६) मानव की खुशी का राज मानवता, ज्ञान, मेहनत, धरती मां, सत्य, विश्व कल्याण भावों को धारण करते हुए जीने में है।

(अ) **मानवता :** जो हर मानव की आत्मा को सुख-दुःख में अपनी आत्मा के समान मानता है और उसके जूते अपने पैर पहनकर उससे व्यवहार करता है, वह मानवता देवी मां की अर्चना करता है। मानवता भावना शाश्वत नैतिक मूल्य है।

(ब) **ज्ञान :** ज्ञान के दो क्षेत्र हैं- १. भौतिक (बाहरी), २. आत्मिक (भीतरी)। जिस मानव को ज्ञान बन्धु के समान रास्ता दिखाता है वह खुशी से भरा रहता है।

(स) **मेहनत :** मेहनत नाम श्रम का है। आश्रम सतत लगातार श्रम को कहते हैं। जो जीवन के आरम्भ पच्चीस वर्ष ज्ञान प्राप्ति हेतु मेहनत (श्रम) करता है, अगले

पच्चीस वर्ष अर्थ प्रप्ति हेतु मेहनत (कर्म) करता है, अगले पच्चीस वर्ष अनुभव बांटने के लिए मेहनत (सेवा) करता है, वही अन्तिम पच्चीस वर्ष परमात्मा गुणों का आनन्द भोगता है। मेहनत उससे बहनवत स्नेह करती हुई उसे खुशियों से भर देती है।

(द) **धरती मां :** जो मानव पृथ्वी आधार से जुड़ा दिन-रात, पक्ष, माह, वर्ष, ऋतु-ऋतु, पर्व-पर्व कायदे से जीवन जीता है वह धरती मां की गोद में उसकी ममता से सरोबार खुश रहता है।

(ई) **सत्य :** जो इन्सान सुख को सुख, दुःख को दुःख, नित्य को नित्य, अनित्य को अनित्य, जड़ को जड़, चैतन्य को चैतन्य समझता है और इनका घाल-मेल अपने जीवन में नहीं करता वह खुशी से सदैव भरा रहता है। सत्य उसका जीवनसाथी के समान सलाहकार रहता है। प्राणियों के लिए शुभ काम करता है। सारे प्राणी उसके प्रति शुभ भाव रखते हैं। इसलिए वह खुशी भाव से भरा रहता है।

खुशियों से भरा होने के लिए अपना जीवन गीत इस प्रकार से गाओ तथा जीयो-

मानवता अपनी देवी है।
ज्ञान हमारा भैय्या है।
मेहनत अपनी बहना है।
धरती मां की गोदी में।
सत्य जीवन साथी संग।
हरहित जीते रहना है।।

(७) खुशी की खुराक खाने का पहला सूत्र है खुशी बांटो। खुशी बांटो खुशी पाओ, दुःख बांटो दुःख बांटो दुःख पाओ। तुम्हारी खुशी या सुख की सार्थकता यह है कि तुम इन्हें बांटकर इनका उपयोग करो। इससे खुशी दोगुनी हो जाएगी।

(८) 'आयोजन' समझने वाला आदमी एक पन्थ सौ काज होता है। वह सौ-कर्म (शतक्रतु) होता है। योजन जोड़ने को कहते हैं। आयोजन दिमाग लगाकर जोड़ने को कहते हैं। अपने दिमाग से मुख्य कामों, उप कामों, सहायक कामों, को जोड़कर समय के अनुसार इनको जोडो। अचानक आनेवाले कामों का भी ध्यान रखो। मिलकर आयोजन बनाओ फिर उसे सफल करो।

(९) आयोजन के लिए संगठन बनाओ। संग मिलकर काम पूरा करने की ठान लेनेवाले लोगों के समूह को संगठन कहते हैं। "विशेष काम के लिए विशेष कुशल व्यक्ति" संगठन का सिद्धान्त है। हर आदमी से योग्यता अनुसार काम और हर आदमी को काम की मात्रा

के अनुसार पैसा संगठन का दूसरा सिद्धान्त है।

(१०) शुभ भावनाएं शुद्ध हृदय बनाती हैं। शुद्ध हृदय शुद्ध हृदय नाड़ियों से भृकुटि में पहुंच शुद्ध बुद्धि बनाता है। शुद्ध बुद्धि कोषिकाओं के झिल्ली-झिल्ली से जीन-जीन पर टंकित होता है। जीन-जीन के कहने से शरीर में शुभ शक्ति उत्सर्ज होता है। शुभ शक्ति उत्सर्ज से सारे काम मानवता भाव के साथ आयोजनपूर्ण ठीक होते हैं। भूलो मत शुभ भावनाएं उत्तम कामों का मूल कारण हैं।

(११) परमात्मा का फरमान परमात्मा के कायनाथ में फैले नियमों से सुनाई देता है। इनको पहचानकर इसके समान जीयो। परमात्मा खुश होगा तुम खुश होगे।

(१२) भीतर परमात्मा हमारे पास हमारे साथ है। भीतर की आवाज है- हर आदमी अपने जैसा है। उससे अपने जैसा व्यवहार करो। रोज फैलते उजाले के समान उठो। ज्ञान के उजल समुन्दर में नहाओ। यम मानो। नियम मानो। मानव सुखी करो।

(१३) संस्कार वह है जो मानव को सम करता है। संस्कार आदमी का उत्तम आभूषण है। तुम्हारी स्वर्ण सजावट है संस्कार। दाल को धोना, चुनना, उसके दोष दूर करना दोष मार्जनम् है। इसके बाद उबाल कर नरम करना उसमें हीनांग पूर्ति है। अन्त में उसमें गरम घी में जीरा, लौंग, हींग, प्याज, अदरख आदि का छौंक देना अतिशय आधान है। इसी प्रकार अपने दोषों को गिन-गिन कर अलग करना, अपने स्वभाव को प्रेममय नरम करना और खुद के जीवन में परमात्म गुणों की सुवास भरना संस्कार है। खुद का रोज संस्कार करो।

(१४) खुद में दोष भरना, कठोर व्यवहार करना, परमात्मा के गुणों से दूर होकर बदनाम होना कुसंस्कार है। कुसंस्कार आदमी को चंचल, अस्थिर, दुःखी करता है। आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि और नियम पालन के व्यक्तिगत योग से तथा यमों के सामाजिक योग के पालन से कुसंस्कार दूर होते हैं।

(१५) सुख शान्ति पूर्वक स्थिर स्थिति को आसन कहते हैं। सांस को तेजी से छोड़ने और लेने को प्राणायाम कहते हैं। शरीर के भीतर झांकना प्रत्याहार है। सद्व्यवहार एक-एक कर खुद में भरना धारणा है। सद्गुणी के पास होने की कोशिश ध्यान है। सद्गुणी के निकट होना समाधि है।

(१६) कोशिश और अभ्यास का नाम मेहनत है। पैसा कमाना है मेहनत करो। परीक्षा पास करनी है मेहनत करो। ऊँचा पद पाना है मेहनत करो। यश पाना है मेहनत करो। हर तरक्की का आधार मेहनत ही है। मेहनत करनेवाले के सामने सौभाग्य (सारे भाग्य) हाथ जोड़ कर खड़े रहते हैं। मेहनत भरे हाथ सारे ज्योतिष्यों को झूठा और बौना कर देते हैं।

(१७) परमात्मा अपनी मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करता है। इसलिए उसका नाम मर्यादा पुरुषोत्तम है। हर कहीं परमात्मा की मर्यादा पहचानो। ईश्वर मर्यादाओं का आदर करो। इन मर्यादाओं का उल्लंघन करनेवाले ज्ञान से बचो। कोई भी कहे कि ईश्वर बिन्दु है या ईश्वर एक जगह है या ईश्वर उतरता है या ईश्वर साकार है तो मत मानो। यह उसकी सर्वव्यापकता या निराकारता की मर्यादा का घोर उल्लंघन है। मर्यादाहीन प्रवचनों की थूकों से अपने कानों को बचाओ। अपनी आंखों को कानों को थूकदान मत बनाओ।

(१८) शुभ वाक्-वाक्। शुभ वाणी कानों आंखों से खुद में भरो और शुभ-शुभ बोलो। शुभ वह है जो तुम्हें अच्छा लगे, दूसरों को भी अच्छा लगे और हो भी अच्छा। अपशब्द या गालीगलौंच सबसे पहले तुममें आते हैं, फिर बाहर निकलते हैं। इसलिए सबसे पहले अपशब्द तुम्हें गन्दा करते हैं।

(१९) विषय का मतलब है "विष यह"। विषय की चाह करने से उसके संग का मन होता है। संग से काम होता है। काम बाधा से क्रोध पैदा होता है। क्रोध से खून में शर्करा पदार्थ घुलते हैं और आवेग होता है। मानव देश-काल-स्थिति भूल जाता है और बुद्धिनाशी हो जाता है। तथा अपना सर्वनाश कर लेता है। इसलिए विषय के ध्यान से बचो।

(२०) खून के रिश्ते, पैसा, जमीन और कुर्सी या पद ये तीन विषय हैं। इनके लिए अन्धा हो जाना सर्वनाश का बीज है।

(२१) जो चीज जैसी है उसको वैसा ही जानना, वैसा ही कहना, वैसा ही उसका उपयोग करना सच्चा सुख है। हथौड़ी से मिट्टी खोदना मत करो।

उपरोक्त २१ वचन सुख नगरी के प्रवेश द्वार हैं। मानव सुख नगरी के निवासी बनो।

(पृष्ठ १६ का शेष...एक कहानी)

डॉ. क्षत्रिय आप तो सांस्कृतिक तकनीक सामाजिक या सांतसा गुरु हैं न ? बताइए इस व्यवस्था को क्या कहेंगे ?

इस का वैदिक नाम है **'अपतिघ्नी'**.. डॉ.क्षत्रिय कहते हैं।

क्या मतलब ? नीरा भाभी पूछती है।

जो आप की इस सफाई व्यवस्था का पति नहीं है, उसको यह दण्ड देनेवाली है इसलिए इसका नाम अपतिघ्नी है। भाभी यह ठीक उसी प्रकार है जैसे कोई फिटर अगर टूल बॉक्स में टूल ठीक न जमाकर भर देता है, तो टूल बॉक्स खोलने पर वे उसके ही पैर पर गिरकर उस अपति को दण्ड देते हैं। वैसे ही जैसे आपके फर्श पर जूता पहना गन्दा अपति इससे दण्ड पाता है.. डॉ.क्षत्रिय कहते हैं।

वाह डॉक्टर साहब वाह... सुरजित मुग्ध हो जाते हैं।

(कथा सच्ची घटना आधारित है)

गतांक से आगे...

"प्रजातन्त्र हत्या क्रान्ति"

प्रजातन्त्र के विचारक मानते हैं कि प्रजातन्त्रीय संस्थानों में भागीदारी देने से प्रजातन्त्र संस्कृति का विकास होता है। बेशक विकास होता है पर वह घटियापन की ओर होता है। प्रजातन्त्र संस्कृति के आधार तत्व विभाजन, खंडन, पदेषणा, लाभेषणा आधारित हैं। ये सब घटिया संस्कृति के जनक हैं। प्रजातन्त्री प्रणाली का कलाओं, देश संस्कृति, संस्थाओं द्वारा जितना पोषण किया जाता है उतनी ही वैचारिक सड़ान्ध देश में फैलती है। प्रजातन्त्री संस्थाओं के प्रमुख प्रायः औसत से कम स्तर के होते हैं। अतः इनके पोषण से बढ़िया विचारों और संस्कृति मूल्यों की भ्रूण हत्याओं का क्रम जारी हो जाता है।।२७।।

प्रजातन्त्र समर्थक विद्यालयों को प्रजातन्त्र की प्रयोगशाला बनाना चाहते हैं। विद्यालय योग्यता और कुशलता के पवित्र, शुद्ध मन्दिर हैं और विद्या-योग्यता आधारित श्रेष्ठ संस्थान हैं। यहां हर विद्यार्थी की योग्यता के क्रम में महत्तानुसार वर्गीकरण सहज सम्भव है। इसमें प्रजातन्त्र के विकृत बीज डालते ही इसका श्रेष्ठ, उन्नत, सही प्रारूप नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगा तथा हो रहा भी है। अतः इस महाभूल को तत्काल सुधारना होगा। विद्या और प्रजातन्त्र एक दूसरे के दुश्मन हैं। विद्या ज्योति है, प्रजातन्त्र गंदला पानी है। प्रजातन्त्र का गंदा पानी विद्या ज्योति बुझा देगा।।२८।।

परिवार और प्रजातन्त्र पर प्रजातन्त्री विचारकों के विचार महाघातक-पातक हैं। उनका एक-एक कर विश्लेषण आवश्यक है।

१) घरेलू व्यवस्था में बच्चों का पालन-पोषण, देख-भाल, घर सम्भालना, पुरुषों की घरेलू जिम्मेवारी सम्भालने के कारण महिलाओं के पास सार्वजनिक कार्यों के लिए समय और शक्ति कम रह जाती है। यहां मूल त्रुटि यह है कि क्या बच्चों का पालन-पोषण, घर सम्भालना सार्वजनिक कार्य नहीं है ? क्या अन्य प्रजातन्त्री सार्वजनिक कार्य इनसे महत्वपूर्ण हैं ? विश्व इतिहास गवाह है विकसित प्रजातन्त्रीय देश युवा कुण्ठाओं, सेक्स समस्याओं, युवा हिंसा, युवा मनमानी, युवा अनुशासनहीनता और युवा अस्तित्व पहचान संकट की समस्याओं का कोई हल ढूंढ नहीं पा रहे हैं।

२) उपरोक्त घरेलू व्यवस्थाओं के कारण महिलाएं राजनैतिक क्षमता से वंचित रहती हैं। यह प्रजातन्त्री विचारधारा घर-बाहर को भी तोड़ने को आमादा है। माता-पिता के रूप में घरेलू कार्य विभाजन के स्थान पर यह माता को "राजनैतिक समता" के लिए घर दायित्वों से तोड़ने का मूर्खतापूर्ण प्रयास करती हैं। भारतीय संस्कृति में माता-पिता, अतिथि, भी घर में शिशु निर्माण

में योगदान देते हैं।

३) महिलाओं की अनुपस्थिति से लोकतन्त्रीय गुणवत्ता कम हो जाती है, ऐसा प्रजातन्त्री विचारकों का सोचना है। उपरोक्त प्रजातन्त्री विचार अवैज्ञानिक सोच पर आधारित है। आधुनिक विज्ञान की अन्त्य खोजें यह बताती हैं कि स्त्री-पुरुष न केवल लिंगभिन्न वरन तनभिन्न, आकारभिन्न, तन रासायनिक प्रक्रियाभिन्न, चयापचयभिन्न, विचार भिन्न और तो और विचार के मस्तिष्क में एक ही बात पर सोच स्थल भिन्न भी हैं। अतः प्रजातन्त्र में नारियों की उपस्थिति से प्रजातन्त्र की गुणवत्ता बढ़ती है घटती नहीं। प्रजतन्त्र व्यवस्था में नारी-पुरुष समान नहीं समकक्ष हैं। दोनों के लिए पचास-पचास प्रतिशत प्रावधान हैं।

४) प्रजातन्त्र की परिवार सम्बन्धी असन्तुलित तथा बचकानी सोच से विश्व समाज की जितनी हानि हुई है उसकी कल्पना करना कठिन है। परिवार रिश्तेमय ममतामय अनुशासन पहली पीठ है। इस पीठ में शिशु सामाजीकरण, समुचित व्यवहार, अस्तित्व पहचान, उचित स्थान, रहन-सहन, खान-पान आदि के पहले पाठ सीखता है। जो उसकी उम्र का निर्धारण करते हैं। समाज एक सम्पूर्ण स्तरीकृत संस्था है, यह समझ प्रजातन्त्र को नहीं है। वह स्तरीकृत को समानीकृत करना चाहता है। जो महामूर्खतापूर्ण संकल्पना है। इस समानीकृत भावना के कारण बच्चे बापों को बच्चे जनने के तरीके समझाने लगे हैं। पति-पत्नी के गहन एकक प्रेम के स्वाभाविक प्रगाढ रिश्ते दूसरित होने लगे हैं। माता-पिता, बहू-बेटा, बच्चे परिवार न होकर एक एक एकक रहने लगे हैं।

५) यह तर्क बेतुका है कि घरेलू कार्य करने से महिलाएं राजनैतिक समता से वंचित हो जाएंगी। क्या होटल में यही कार्य करनेवालों पर भी यही तर्क लागू होगा ? प्रजातन्त्री राजनीति क्या कार्य पर निर्भर है ? गृहकार्य के कारण राजनीति में महिलाओं की अनुपस्थिति है तो नौकरी कार्यों के कारण या कृषि कार्यों के कारण या व्यावसायिक कारणों के कारण राजनीति से सबकी अनुपस्थिति नहीं है। ऐसे तर्कों से तो कार्य करना ही नाजायज हो जाएगा।

६) प्रजातन्त्री मान्यता है कि बच्चा अनुभव करे कि सभी लोग समान हैं। अर्थात् बच्चा बच्चा न रह जाए, एक ही दिन में मां हो जाए तथा बाप हो जाए। प्रजातन्त्र वाहियात संकल्पनाओं का भानुमति का काला पिटारा है। मुझे तो लगता है यह कोठाई, शराबी, कबाबी, पाश्चात्य रूसोवादिता जीते जीवनों की उपज है। जिसे पाश्चात्य की गोद में पले मानसों ने भारत जैसे पवित्र सांस्कृतिक देश में लागू कर दिया है। और भारत उसके पातक बोझ तले कराह रहा है।। २६।। ..... *क्रमशः।*

विशेष : इस पत्रिका में प्रकाशित समग्र लेख डॉ.त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय जी के हैं... "आर्यवीर"

"भिखारी नहीं स्वामी बनो"

(१) भीख मांगना दुनियां का सबसे घटिया काम है। कहीं भी, कभी भी, किसी से भी भीख मत मांगो। भिखारी कभी सुखारी नहीं हो सकता है।

(२) भीख आदमी की आत्मा का पतन करती है। अपनी आत्मा को उन्नत करो, भीख मांगने से बचो।

(३) यदि काई भीख के समान तुम्हें कोई चीज देना चाहता है, तो उसे कह दो..

भीख कभी खुदा से भी न मांगी।
तुम तो हो अरे अदने से आदमी।।

(४) सचमुच खुदा परमात्मा से भी भीख न मांगो। इससे मानव की आदत खराब होती है।

(५) भीख दो भी मत, सीख दो। भिखारी को काम की सीख दो। भिखारी को उसकी क्षमता अनुरूप कुछ भी काम दो और उसका मूल्य दो। यह उसकी सच्ची सहायता है।

(६) कहावत भी है..

उत्तम खेती मध्यम बान, निकृष्ट चाकरी भीख निदान।

(७) भीख नहीं दूसरों से गुणों की सीख लो। दत्तात्रय के चौबीस गुरु थे। विश्व में सैकड़ों गुण गुरु हैं। गुण धारण करो गुणी बन जाओगे।

(८) भीखदार मत बनो, हकदार बनो। नियत वेतन के लिए नियत समय में नियत काम ईमानदारीपूर्वक करो। अपना हक वेतन लो। हक वेतन बरकती होता है।

(९) सच्चा बरकतीराम वह है जो परमात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव के अनुरूप अपने क्षेत्र अपने कार्य करता है।

(१०) परमात्मा शुभ ही शुभ है। उसके समस्त गुण-कर्म-स्वभाव शुभ ही शुभ हैं। उसके गुण-कर्म-स्वभाव अपने जीवन में उतारने का प्रयास करना सर्व-शुभ और सर्व-सुख उत्पन्न करेगा।

(११) पराश्रित होना दुःखद है। स्वाश्रित होना सुखद है। परमात्माश्रित होना भी पराश्रित होना है। स्वाश्रित होने की अन्त्यावस्था में ब्रह्म-नियम के अनुरूप परमात्मा स्वयं तुम्हारा वरण करेगा।

(१२) परमात्मा वरुण है। वर वह है जो वरण करता है। वरुण वह है जो स्वयमेव उत्कृष्ट (समकक्षों में प्रथम) का वरण करता है। वरुण द्वारा वरण किए जाने के लिए उत्कृष्ट बनो।

(१३) भिखारी दीन-हीन आत्मा है। दीन-हीन आत्मा कभी भी उत्कृष्ट नहीं हो सकता है। दीन-हीन व्यक्ति तो आत्महना होता है। और परमात्मा का यह वचन है कि आत्महना व्यक्ति के लिए गहन अन्धकार से भरा हुआ लोक तय है।

(१४) परमात्मा का राज्य रोते, रिरियाते, दीन-हीन व्यक्ति के लिए नहीं है। क्या कोई सामान्य व्यक्ति भी रोते रिरियाते दीन-हीन व्यक्ति को अपना सहकर्मी बनाना पसन्द करेगा ? परमात्मा के राज्य में शूरवीर, उत्साह, आनन्द, आह्लाद भरे साधक ही प्रवेश पा सकते हैं।

“अधुनातन है संस्कृति पुरातन”

इन्फोसिस संस्थान के अध्यक्ष एन.आर.नारायण मूर्ति ताकतवर होने के रहस्य का पर्दाफाश करते हैं कि.. “सर्वप्रथम ताकत या शक्ति यह है कि अपने आस-पास के लोगों का जीवन बेहतर बनाएं, द्वितीय ताकत का तात्पर्य यह है कि तुम स्वयं के विषय में बेहतर महसूस करो। इसका अर्थ यह है कि तुमने उत्तम कर्म किए और लोग लाभान्वित हुए। और मैं यह स्पष्ट कहना चाहुंगा कि यह निश्चित सत्य है कि आस-पास के लोगों को नया उन्नत करना” नारायणमूर्ति विश्व के उद्योगपतियों में स्थान रखते हैं। उनके उपरोक्त विचार २६ मार्च २००७ के टाइम्स ऑफ इंडिया मुम्बई पत्र में छपे हैं। यह अधुनातन उद्योग संस्कृति में सफलता का मन्त्र है।

आज से पांच हजार वर्ष पूर्व अर्थवेद के अंश रूप गिना जानेवाला महाभारत का उद्योग पर्व जिसे विदुरनीति भी कहते हैं इसी लक्ष्य को इस प्रकार कहता है.. “जो आप-पास के सम्पूर्ण प्राणियों के लिए हितकर हो तथा अपने आप के लिए सुखद हो वह ऐश्वर्य हेतु करना सर्व अर्थ सिद्धि का मूल मन्त्र है” इस मूल मन्त्र का अगला सूत्र कहता है जिसमें आगे बढ़ने की ताकद या शक्ति, प्रभाव, तेज, पराक्रम और उद्योग (उत्थान भाव) है, साथ में निश्चय व्यवसाय भी है, उसे कभी आजीविका का भय नहीं होता है। मोटी भाषा में ऐसा व्यक्ति आजीविका अभय होता है।

इसी क्रम में यह देखना रोचक है कि भारत के अन्य श्रेष्ठ उद्योगपति इस सन्दर्भ में क्या कहते हैं। **विजय माल्या जो यू.बी. संस्थान अध्यक्ष** हैं लिखते हैं कि ताकत या शक्ति एक भारी शब्द है। यह लगता है कि प्रभाव इसका अर्थ है और मैं कितना प्रभावशाली हूं, या नहीं हूं इसका निर्णय दूसरों के हाथ में है। ताकत के विषय में मतिभ्रम है। शक्तिमान होने का अर्थ दूसरों के अहं को प्रभावित करना है। मुझमें अहं नहीं है, मैं वह करता हूं जो मेरे व्यवसाय को उन्नत करे। यदि लोग मुझे शक्तिमान कहते हैं तो इससे मेरा चरित्र या व्यवहार किसी तरह भी बदलनेवाला नहीं है। स्पष्ट है कि विजय माल्या उद्योग पर्व के सूत्र के प्रभाव उद्योग (उत्थान) व्यवसाय शब्दों के अन्तर्गत स्वयं को अभिव्यक्त कर रहे हैं। **विप्रो के अध्यक्ष अजीम प्रेमजी** कहते हैं कि “मैं यह महसूस नहीं करता कि मैं अतिमानव (सुपरमैन) हूं। ताकद जिम्मेवारी और कड़ी मेहनत है। जिस दिन व्यक्ति इन्हें छोड़ देता है, ताकत उसे छोड़ देती है।” वास्तव में वे आगे बढ़ने की शक्ति, निश्चय, उद्योग को ही दूसरे शब्दों में रेखांकित कर रहे हैं।

अन्तिम महत्वपूर्ण व्यक्ति **नन्दन नीलकानी जो इन्फोसिस कि प्रमुख कार्यकारी अधिकारी** हैं, कहते हैं कि “मेरे लिए जो सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि परिवर्तन के क्रम को प्रभावित करना- अन्ततः सारा का सारा खेल विचार शक्ति (पावर ऑफ इण्डिया) है।”

स्पष्ट है कि उद्योग पर्व या विदुर नीति के सूत्रों में दिए तत्व १) आस-पास के प्रणियों का हित कर, २) स्वयं को सुखद, ३) ऐश्वर्यभाव, ४) बढ़ने की शक्ति, ५) प्रभाव, ६) तेज, ७) पराक्रम (कड़ी मेहनत), ८) उद्योग, ९) निश्चय और १०) व्यवसाय भाव हर व्यक्ति और उद्योग की ताकत के आधार हैं। इस आलेख में उद्योगपतियों के विचार टाइम्स ऑफ इंडिया मुम्बई के २६ मार्च २००६ अंक के सेकंड स्पेस से तथा संस्कृति उद्योग सूत्र विदुर नीति ५/४०-४१ सूत्रों से लिए गए हैं।

कहानी

दृश्य १

वैश्विक अभिकल्पन ग्लोबल डिझाइन्स को बृहदाकार भवन में एक साधारण सा आदमी अर्ध बिखरे बालों, हाथ झुलाती बेपरवाह चाल, शरीर अनुपात में ढीले कपड़े पहने हुए, पैरों में भारी सुरक्षा बूट पहने, सिर पर सुरक्षा हेलमेट लगाए प्रवेश करता है। वह एक मुख्य अभियन्ता अभिकल्पन (चीफ इंजीनीयर डिझाइन्स) के केबिन का दरवाजा खटखटा दरवाजा खोलता है। सामने एक छोटे कद का गौरवर्णीय चमकती आंखों वाला चुस्त-दुरुस्त, टीप-टाप कपड़ों वाला, तरतीब कटे कंघी किए बालों वाला, कोट टाई सहित सुसज्जित व्यक्ति आगन्तुक को देख खुशी भरे स्वर चहकता है। स्वस्ति-स्वस्ति डॉ.क्षत्रिय और उठकर दोनों हाथ हाथों में ले स्वागत करता है। उसे अपने पास के कुर्सी पर बिठाता है। स्वस्ति-स्वस्ति कह बैठते डॉ. क्षत्रिय पूछते हैं- आपको स्वस्ति-स्वस्ति याद रहा सुरजित मोहन जी ?

भूलूंगा कैसे ? मैं लॉर्ड मैकॉले की औलाद थोड़े ही हूं ? सुरजित हंसते हैं।

आप व्यस्त तो नहीं, खाली हैं क्या ?

अभी अभी नए ले-आऊट का बड़ा काम समाप्त किया है। फुरसत में हूं, वे हाथ फैलाते हैं बैठे-बैठे।

यहां प्रबन्धन प्रशिक्षण हेतु आया हूं, सोचा आप से मिल लूं।

कुछ नया मिला प्रशिक्षण में ?

जापानी तकनीक की धूम है, जापानी कहते हैं उन्होंने सब भारत से लिया है और भारतीय जापान के पीछे भागते हैं। गृहव्यवस्था के पांच तत्व जो आज बताए गए उससे ज्यादा तत्व तो गृहणी की वैदिक संज्ञाओं में दिए गए हैं- क्षत्रिय बोले।

मेरी गृहणी आप की भक्त हैं।

यह उनकी महानता है, मैं उनकी गृहव्यवस्था का आदर करता हूं। तभी बैरा कॉफी लाया, उसने भी स्वस्ति-स्वस्ति कह अभिवादन किया। कॉफी रखने लगा।

क्यों भाई अच्छे हो ? परिवार अच्छा है ?

जी साहब, प्रभु कृपा है। मेरे घर अंग्रेजियत नहीं घुसती, कह वह चला जाता है। दोनों कॉफी पीते हैं।

श्याम को घर आइए, लम्बी गप-शप करेंगे। सुरजित बोले।

कोशिश करुंगा, कह वह उठते हैं।

दृश्य २

नीरा परेशान है, आज घर आनेवालों का तांता लग गया है। सबसे पहले एक व्यक्ति

चमरौंधा जूता पहने आया। घंटी बजाने के बाद दरवाजा खोलते ही अन्दर आ गया।

साहब हैं क्या ?

कौन साहब ? नीरा ने पूछा।

वो शर्मा जी।

यहां कोई शर्मा जी नहीं रहते, नीरा बोली।

यह १० बी, सड़क ५ नहीं है क्या ?

यह १० बी, सड़क ४ है, सड़क ५ पीछे है। नीरा खीज गई।

ओह, गलत आ गया। वह चला गया पर फर्श पर ढेर सारी धूल चमरौंधे जूते से छोड़ गया।

दृश्य ३

दूसरी बार तीन छोटे बच्चे आए। तीनों पैरों से बड़ी चप्पल पहने थे। घण्टी बजते नीरा ने दरवाजा खोला। वे तीनों अन्दर घुस कमरे में आ गए। बगल घर का मोनू बोला- काकी जी थोड़ी दही मिलेगी क्या ? नीरा दही लेने गई। बच्चे सोफे पर बैठे आदतन फर्श पर पैर रगड़ते धूल बिखेरते हैं। नीरा उन्हें देखती है, दही देती उन्हें भेजती है। धूल देख खीजती है। नीरा अपने घर में शौच-सफाई का बहुत ही ध्यान रखती है। वह समझती है कि अष्टांग योग के पांच नियमों में शौच पहला नियम है।

दृश्य ४

नीरा झाड़ू लेने गई कि धूल को साफ कर सके। झाड़ू हाथ में लिया ही था कि घण्टी बजी। झाड़ू यथास्थान रख उसने दरवाजा खोला। वहां मुहल्ले की छै महिलाएं खड़ी थीं। सभी नीरा की अंग्रेजियत से नफरत को जानती थीं। अतः सबने स्वस्ति-स्वस्ति कह अभिवादन किया।

स्वस्ति-स्वस्ति आइए नीरा बोली। एक ने चप्पल बाहर उतारी, बाकी पांचो मय जूते-चप्पल अन्दर आ गईं। अलग-अलग जगह बैठीं। फिर धूल; नीरा उनके जूते-चप्पल की धूल पर सोच रही थी।

बैठिए.. बैठिए। आराम से बैठिए न नीरा ने कहा।

हम सोच रही थीं कि हौजी बनाइ जाए हमारे मुहल्ले में। सब पचास-पचास रुपए महिना डालेंगी। जिसकी लाटरी निकलेगी उसके घर बैठेगी। और ज्यादा नहीं एक-एक मिठाई पीस खाएंगे। आप की भी सहमति चाहिए।

धूल से परेशान नीरा सोच रही थी कि मुहल्लेभर की महिलाएं घर में जूतों समेत आएंगी तो कितनी धूल होगी।

क्या सोचने लगीं ? सरिता ने कहा।

कुछ नहीं मैं सहमत हूं, पर हम खाली गपशप न कर केवल हौजी न खेल कुछ रचनात्मक चर्चा भी करेंगे।

उस पर भी सोच-विचार कर लेंगी। मोहंबी ने कहा, तो आप सहमत हैं न ?

हां, नीरा ने कहा, मैं आप के लिए चाय बनाती हूं।

नहीं-नहीं, अच्छा ठीक है कुछ महिलाएं बोलीं।

सब ने चाय पी। दूसरी गली का निन्दा पुराण खोला। एक महिला के हाथ से पानी का गिलास लेते समय थोड़ा सा पानी फर्श पर छलक गया। फिर सब चली गईं।

दृश्य ५

नीरा ने वहां पांच जूतों से फैली धूल देखी। पैरों से महसूस की। झाड़ू उठाया और झाड़ू लगाते सोचने लगी, आखिर ऐसे अनुशासनहीन लोगों का क्या इलाज है जो धड़धड़ाते धूलभरे जूते पहन अन्दर आ जाते हैं। अचानक उसका पैर छलके पानी पर पड़ा वह फिसलते बची। उसके दिमाग बिजली कौंधी यह ठीक रहेगा। फर्श इतना चिकना साफ कर दिया जाए कि जूता पहने लोग गिर जाएं। वाह क्या बात है, पानी गिरानेवाली दीपा को धन्यवाद। धूल बाहर फैंकते उसके दिमाग में पूरी योजना आ गई। शाम को पति से बातचित कर उसने उस पर अमल शुरु कर दिया।

बाई के फर्श साफ कर जाने के बाद उसने घर के लाल फर्श को ब्रासो लगाकर चिकना किया। और चमचम फर्श पर जूते पहन कर चलने का प्रयास किया। फिसलते गिरने को देख एक सन्तुष्टि भाव उसके चेहरे पर आया।

दृश्य ६

डॉ.क्षत्रिय उनकी पत्नी उनके दोनों बच्चे सुरजित मोहन के घर पहुंचे। घंटी बजाई। नीरा ने दरवाजा खोला। आइए-आइए। स्वस्ति-स्वस्ति !

स्वस्ति-स्वस्ति ! बच्चे बोले। डॉ.क्षत्रिय उनकी पत्नी चप्पल उतार अन्दर गए। बच्चे वैसे ही प्रविष्ट हुए और दोनों धडाम् से गिरे। नीरा ने ही उन्हें संभाला।

पत्नी ने बच्चों को हिदायत दी.. जूते बाहर क्यों नहीं उतारे, मिली न सजा ?

बहुत अच्छा भाभी, क्या व्यवस्था की है आपनक गन्दी आदत वाले को दण्ड देने की।

तभी सुरजित मोहन अन्दर से हंसते-हंसते बाहर आते हैं, कहते हैं.. तो नीरा तुम्हारा प्रयोग हर बार सफल रहा न ? आइए-आइए, बैठिए।

सबके बैठने पानी पीने के बाद...

(शेष पृष्ठ ६ पर देखें)

सांतसा न्यास के लिए इस मासिक पत्रिका का प्रकाशन सम्पादक ब्र. अरुणकुमार "आर्यवीर" द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित कराया गया। मुद्रक : प्रिंटकॉन, अहमदाबाद ☏ ०७९–३२९८३११८